Toppersnotes
Unleash the topper in you

2nd – ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

हिन्दी, पेपर II

भाग – 4

रचनाएँ, कहानियाँ एवं शिक्षण विधियाँ

SIERRA INNOVATIONS

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	हिन्दी	
1.	कबीर ग्रन्थावली	1
2.	तुलसीदास	17
3.	महाकवि सूरदास	26
4.	भक्त शिरोमणि मीराबाई	40
5.	बिहारी रत्नाकर (प्रथम दोहे)	50
6.	वीर रसावतार कवि सूर्यमल्ल मिश्रण	57
7.	रामधारीसिंह दिनकर	64
8.	जयशंकर प्रसाद – कामायनी का श्रद्धा सर्ग	73
9.	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	84
10.	नाटक – 'लहरों के राजहंस'	93
11.	खून का टीका – यादवेन्द्र चन्द्र शर्मा	97
12.	चंद्रधर शर्मा गुलेरी	100
13.	पूस की रात	108
14.	हेतु भारद्वाज (होती लाल भारद्वाज)	113
15.	विजयदान देथा	116
	शिक्षण विधि	
1.	हिन्दी शिक्षण विधि	125
2.	भाषा कौशल	150
3.	निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षण	158
4.	शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठ्य पुस्तक, बहुमाध्यम, अन्य संसाधन	161
5.	भाषा शिक्षण में मूल्यांकन	167
6.	सतत् एवं समग्र मूल्यांकन	169

वीर रसावतार कवि सूर्यमल्ल मिश्रण

वीर सतसई (प्रथम 20 दोहे)

राजस्थान की वीर प्रसता धरती पर जन्म लेने वाले वीर रसावतार कवि सूर्यमल्ल मिश्रण का जन्म चारणों की मीसण शाखा न के एक प्रतिष्ठित परिवार में संवत् 1872 की कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा को बूंदी में हुआ था। इनके पिता चंडीदान बूंदी महाराव रामसिंह जी के दरबार में प्रतिष्ठित कवि थे। सूर्यमल्ल ओजस्वी कवि होने के साथ-साथ सत्यनिष्ठ और स्वाभिमानी व्यक्तित्व के धनी थे। म इनके पिता ही नहीं बल्कि पितामह भी डिंगल के श्रेष्ठ कवि थे। सूर्यमल्ल मिश्रण हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, डिंगल और (4 पिंगल भाषाओं में पारंगत थे। अध्यवसायी होने के कारण इन्होंने (8 काव्य शास्त्र के साथ-साथ इतिहास, व्याकरण, मीमांसा, न्याय मृत शास्त्र, संगीत शास्त्र, दर्शन और ज्योतिष का गम्भीर अध्ययन किया। बंध इन विषयों में इनकी असाधारण पैठ का प्रभाव इनकी रचनाओं में यत्र-तत्र देखा जा सकता है। मिश्रण ने 10 वर्ष की उम्र में 'राम रंजाट' नामक पद्य ग्रन्थ बनाया, जिसमें बूंदी के राव राजा रामसिंह के शिकार और दौरे का वर्णन है। वंश भास्कर' सूर्यमल्ल मिश्रण की कीर्ति का प्रमुख स्तम्भ है। राजस्थान के परवर्ती इतिहास लेखकों ने इस ग्रन्थ से पर्याप्त सहायता ली है। वंश भास्कर को उन्होंने पूरा गप नहीं किया। वीर सतसई में 288 दोहे हैं। वीर सतसई सन् सत्तावन के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का काव्यमय उद्गार है। वीरांगनाओं स का त्याग व मातृभूमि प्रेम उनके 'वीर सतसई' ग्रंथ में साकार हो ग उठा है। राजस्थान के मरण त्योहार का वर्णन कवि मिश्रण ने निम्न प्रकार किया है

आज घरै सासू कहै, हरख अचाणक काय।

बहू बलेबा हूलसै, पूत मरेबा जाय।

सतसई में डिंगल के एक विशिष्ट अलंकार वैण सगाई' का प्रयोग मिलता है। वैणसगाई से काव्य में गणों अथवा दग्धाक्षरों । का दोष नहीं रहता। सूर्यमल्ल मिश्रण श्रृंगार व वीर रस के कवि हैं। उन्होंने प्रबन्ध तथा मुक्तक दोनों प्रकार की काव्य रचना की। वंश भास्कर' बूंदी राज्य का इतिहास है तो 'वीर सतसई' मुक्तक शैली में लिखी गई वीर रस की रचना । वीर सतसई के दोहें राजस्थान के वीरों के स्वाभिमान, दृढ़ता व समर्पण का जीवन्त दस्तावेज है। कवि सूर्यमल्ल मिश्रण बूंदी के राज्य कवि ही नहीं बल्कि सन् सत्तावन की क्रान्ति के प्रत्यक्षदर्शी साहित्यकार भी रहे। उनकी रचनाओं में मरुधरा की वीर रमणियों का स्वाभाविक वर्णन आज भी जोश उत्पन्न करने वाला है।

संक्षिप्त जीवन वृत

नाम - कवि सूर्यमल्ल मिश्रण

जन्म वर्ष - सं.1872

जन्म स्थान - बूंदी

पिता - कवि चण्डीदान

माता - भवानीबाई

रचना - (1) वंश भास्कर (2) वीर सतसई (3) वलविद्विलास (4) राम रंजाट (5) छंदो मयूख (6) सती रासो (7) धातु रूपावली (8) फुटकर कवित्त व सवैये

मृत्यु - आषाढ़ बदी-11 सं. 1925 कविराजा श्यामलदास व मिश्र बंधुओं ने मृत्यु वर्ष सं. 1920 माना है।

वीर सतसई-सूर्यमल्ल मिश्रण (प्रथम 20 दोहे)

(1)

लाऊं पै सिर लाज हूं, सदा कहाऊ दास।

गणवई गाऊं तूझ गुण, पाऊं वीर प्रकास।

शब्दार्थ- लाज- लज्जा, संकोच व विनम्रता, गणवई7 गणपति (गणेश)

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने अपनी कृति वीर o सतसई' में मंगलाचरण के रूप में प्रस्तुत इस दोहे में बुद्धि के देवता को गणेश जी की वंदना की है। कवि कहता है कि गणेश जी! मैं न अत्यंत विनम्रता, संकोच व लज्जा के साथ आपके चरणों में सिर झुकाता हूँ। मैं सदैव आपका दास कहलाता हूँ। मैं आपके गुणों का गान करता हूँ। प्रभु गणेश आप मुझे वीर प्रकाश रूपी वह शक्ति दें,

जिससे मैं वांछित काव्य की रचना कर सकूँ। भाव यह है कि कवि ई' विघ्न विनाशक गणपति की वंदना करके अपनी रचना के लिए रों कृपा दृष्टि चाहता है। है।

विशेष

(1) दोहे में राजस्थानी शब्दों का प्रयोग है।

(2) वयणसगाई अलंकार है।

(3) शान्त रस है।

(2)

आणी उर जाणी अतुल, गाणी करण अगूढ।

बाणी जगराणी वले, मैं चीताणी मूढ।

शब्दार्थ - आणी-आनी, जाणी- जानने वाली, अतुल = जिसकी तुलना न की जा सके, गाणी = गान, करण = करना, नाज अगूढ - स्पष्ट वाणी, वाणी जग राणी - वाणी के जगत की रानी अर्थात् सरस्वती, चिंताणी = चिंतित, मूढ़ = मूर्ख

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने वीर सतसई के इस दोहे में वाणी की देवी सरस्वती की वंदना की है। कवि कहता है कि वाणी की देवी सरस्वती को हृदय में सुमिरन करते ही अपार ज्ञान चित्त में आ जाता है। इससे सारे गूढ़ तथ्य स्पष्ट हो जाते हैं। मैं कितना मूर्ख हूँ कि माँ सरस्वती का स्मरण करके भी चिंता कर रहा । हैं। भाव यह है कि सरस्वती के स्मरण करते ही सारे गूढ विषय स्पष्ट हो जाते हैं। अत: अपने हृदय में सरस्वती को लाकर कोई चिंता नहीं करनी चाहिए।

विशेष :- वयणसगाई अलंकार का प्रयोग हुआ। हिन्दी के अनुप्रास अलंकार की तरह राजस्थानी भाषा में वयणसगाई अलंकार के प्रयोग की परम्परा है।

(3)

बैण सगाई वालियाँ, पेखीजै रस पोस।

बीर हुतासण बोल में, दीसै हेक न दोस।।

शब्दार्थ - वालियाँ = लाने से, पेखी = देखा, पोस = पोषण (उत्कर्ष), हुतासण = अग्नि, हेक- एक भी

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने इस दोहे में वीर रस के प्रभाव में वयण सगाई अलंकार का वर्णन किया है। उन्होंने कहा कि 'वयणसगाई' अलंकार के लाने से रस का उत्कर्ष बढ़ता है, जिससे काव्य के दोष दिखाई नहीं पड़ते। कवि कहता है कि वीर रस इससे भी अधिक उपयोगी है, क्योंकि वीर रस अग्नि के समान होता है। जैसे अग्नि प्रज्ज्वलित होने पर सारे दोष उसमें भस्म हो जाते हैं उसी प्रकार वीर रस के वर्णन में सारे काव्य दोष समाप्त हो जाते हैं अर्थात दिखाई नहीं देते।

विशेष :- 'वीर हतासण बोल' में रूपक अलंकार है।

(4)

बरसां बीतियो, गण चौ चंद गुणीस।

बिसहर तिथ गुरु जेठ बदि, समय पलट्टी सीस।।

शब्दार्थ - बीकम = विक्रम संवत्, गण चौ चंद गुणीस = उन्नीसौ चौदह गिनो, विसहर = विषधर तिथि (नाग पंचमी), पलट्टी = पलटा, गुरु - बृहस्पतिवार, सीस = शीर्ष

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण सन् सत्तावन की क्रान्ति के प्रत्यक्षदर्शी कवि हैं। उन्होंने इस दोहे में उसी घटना का जिक्र किया है। संवत् 1914 (विक्रम संवत् का 1914 अर्थात् ईस्वी सन् का सन् 1857) में ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी की तारीख को समय ने पलटा खाया। बृहस्पतिवार के दिन शीर्ष स्तर पर हुई क्रान्ति या परिवर्तन का संकेत दिया है।

विशेष :- (1) विक्रम संवत् का आरम्भ ईस्वी सन् के 57 वर्ष पूर्व हुआ था। अत: विक्रम संवत् से ईस्वी सन् की गणना करते समय 57 वर्ष घटा दिये जाते हैं। अत: विक्रम संवत् 1914 का अर्थ हुआ सन् 1857 (2) विक्रम बरसां बीतियों' मेंवृत्यानुप्रास अलंकार है।

(5)

इकडंडी गिण एकरी, भूले कुल साभाव।

सूरां आल ऐस में, अकज गुमाई आव।

शब्दार्थ - इक डंकी - एक छत्र शासन, ओक = एक,री 1- की, साभाव - स्वभाव, सू्र = योद्धा, आलस = आलस्य, ऐस . . ऐश्वर्य/विलास, अकज - बिना काज के,गमायी = गँवा दी, आव = आयु

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण कह रहे हैं कि पूरे देश 5 में अंग्रेजों का एक छत्र राज्य देखकर भारतीय योद्धा अपनी वीरता का वंशीय स्वभाव भूल गए। भाव यह है कि अंग्रेजों के शासन में वे आलस्य व विलासिता के कारण अपनी शूरवीरता को भूलकर अंग्रेजों के अधीन रहने लगे। इससे उन्होंने अपनी आयु (जीवन) को बिना काज (कार्य) के ही गवाँ दिया।

विशेष :- भारतीय शूरवीरों के जोश को जगाया गया है।

(6)

इण वेला रजपूत वे, राजस गुण रंजाट।

सुमरण लग्गा बीर सब, बीरां रौ कुलबाट।

शब्दार्थ - इण = इस, वेला = समय, रजपूत = राजपूत क्षत्रिय, राजस = वीरता, गुण = गिनने, रंजार = रंग गए, सुमरण = स्मरण, कुल वाट - कुल का मार्ग।

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण कह रहे हैं कि सन् सत्तावन की क्रान्ति का बिगुल बजते ही जो क्षत्रिय लोग थे, वे वीरता के रंग में रंग गए। वे सभी योद्धा अपनी वीरों के कुल की मर्यादा को याद करने लगे। भाव यह है कि उनके हृदय में पराधीनता को उखाड़ फेंकने के लिए जोश उत्पन्न होने लगा।

विशेष:

(1) कवि ने सन् सत्तावन की क्रान्ति के समय वीर योद्धाओं के मन में उत्पन्न जोश का वर्णन किया।

(2) रचना में वीर रस तथा ओज गुण है।

(7)

सत्तसई दोहामयी, मीसण सूरजमाल। जंपै भड़खाणी जठै, सुणै कायरां साल।।

शब्दार्थ - सतसई = सात सौ छन्दों का ग्रन्थ, मीसण - या चारण जाति का एक गोत्र, जपै - रचता है, भड़खाणी - वीरों को

खाने वाली, सुणे - सुनने, कायराँ = कायर, साल - काँटा/दुख

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने अपने इस दोहे में करते अपनी सतसई की महिमा का बखान किया है। वे कहते हैं कि वीर अर्थ सतसई की रचना सूर्यमल्ल मिश्रण ने की है यह वीरों के प्राण लेने र है। वाली है तथा कायरों के लिए कांटे के समान है। भाव यह है कि

इसे सुनकर वीर अपने प्राणों का उत्सर्ग करेंगे अर्थात् देश के लिए बलिदान हो जाएंगे। लेकिन कायर इसे सुनकर भयभीत होंगे इसलिए यह कायरों के लिए काँटे के समान पीड़ादायी है।

विशेष :- कवि ने यहाँ अपनी सतसई के उद्देश्य पर प्रकाश डाला है। प्राकृत भाषा के कवि हाल की 'गाथा सप्तसई' से सतसई परम्परा का आरंभ हुआ।

(8)

नथी रजोगुण ज्यां नरां, वा पूरौ न ऊफांणै।

वे भी सुणतां ऊफणै, पूरा वीर प्रमाणं।

शब्दार्थ - नथी = नहीं, रजोगुण = वीरता, ज्यों = जिन, नरों - मनुष्यों, ऊफाण - उफान/जोश

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण कहते हैं कि सतसई के दोहों में इतनी ताकत है कि जिन मनुष्यों में रजोगुण अर्थात् राजसी वीरता एवं जोश नहीं भी है वे भी इस रचना को सुनकर जोश और वीरता से उफन पड़ेंगे। भाव यह है कि यह रचना लोगों में वीरता का जोश जगाने में सफल होगी।

विशेष :- 'उत्साह' नामक स्थायी भाव होने के कारण 'वीर' रस की निष्पत्ति हो रही है। विभावना अलंकार है।

जे दोही पख ऊजला, जूझण पूरा जोध।

सुणताँ वे भड़ सौ गुणा, बीर प्रकासण बोध।।

शब्दार्थ - जे- जो, दो ही पक्ष = दोनों पक्षों में, ऊजला = उज्ज्वल, जूझण = मुकाबले में, पूरा = भरपूर, जोध - युद्ध, सुणतां = सुनते ही, भड़ = योद्धा/वीर, बोध = ज्ञान ।

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण सतसई की महिमा का वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि जिन लोगों के पितृ व मातृ पक्ष दोनों ही उज्ज्वल हैं अर्थात अकलंकित हैं तथा युद्ध में मुकाबले में पूरी तरह सक्षम हैं वे इस रचना को सुनकर सौगुनी वीरता से प्रबुद्ध होकर मुकाबला करेंगे। भाव यह है कि कीर्तिवान शूरवीरों के उत्साह को सतसई के छंद • सौ गुना कर देंगे।

विशेष :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने देश भक्तों में वीर रस का संचार कर जोश पैदा किया है।

(10)

दमँगल बिण अपचौ दियण, बीर धणी रौ धान।

जीवण धण बाल्हा जिका, छोड़ो जहर समान।।

शब्दार्थ - दमंगल = युद्ध, विण = बिना, अपचौ = अजीर्ण, धणी - स्वामी, धान = अन्न, जीवण = जीवन, धण - स्त्री, बाल्हा = प्रिय, जिकां - जिन्हें

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण कह रहे हैं कि वीर स्वामी का दिया हुआ अन्न बिना युद्ध के अपच पैदा करता है।

जिन लोगों को अपना जीवन व स्त्री प्रिय है उन्हें यह अन्न जहर के समान छोड़ देना चाहिए। भाव यह है कि देश का अन्न खाने वालों को देश की रक्षार्थ युद्ध से विमुख नहीं होना चाहिए। जिनको अपनी जान या स्त्री प्यारी है उन्हें उस देश का अन्न नहीं खाना चाहिए अन्यथा वह अजीर्ण बनकर जहर के समान हो जाएगा। वीर स्वामी का अन्न युद्ध से ही पचता है।

विशेष :- कवि ने राजस्थान की युद्ध प्रियता व देशरक्षार्थ बलिदान होने के भाव को व्यंजित किया है।

(11)

नहँ डाकी अरिखावणौ, आयाँ केवल बार।

बधाबधी निज खावणौ, सो डाकी सरदार।।

शब्दार्थ - डाकी = जबरदस्त सेनानी/प्रतापी वीर, अरिदुश्मन, बधावधी = प्रतिस्पर्धा।

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण कह रहे हैं कि जबरदस्त सेनानी वह नहीं है जो अवसर आने पर शत्रु का संहार करता है बल्कि डाकी सरदार वह है जो अपने प्राणों का बलिदान करने में अपने ही लोगों से प्रतिस्पर्धा करता है। भाव यह है कि असली

योद्धा वह है जो अपने प्राणों का उत्सर्ग करने के लिए उद्धत रहता है। डाकिन के अर्थ में ले तो डाकिन केवल अपने दुश्मन को खाती है लेकिन डाकी सरदार अर्थात् सच्चाशूरवीरतो अपने प्राणों का भी उत्सर्ग करता है।

विशेष :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने राजस्थान की वीर भूमि में 'मरण त्योहार' की भावना को जाग्रत किया है।

(12)

डाकी डाकर रौ रिजक, ताखां रौ विष एक।

गहल मुवां ही ऊतरै, सुणिया सूर अनेक।।

शब्दार्थ - रिजक = रोजी-रोटी/अजीविका हेतु दिया गया अन्न, तारवां = तक्षक सर्प, गहल = जहर खुमारी, मुवां = मरने पर

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण कहता है कि प्रतापी स्वामी द्वारा दिया गया अन्न व तक्षक सर्प का जहर एक समान असरकारी होता है। ये दोनों मरने पर ही उतरते हैं। भाव यह है कि वीर सरदार के अन्न को खाकर कोई हाथ पर हाथ रखे नहीं रह सकता। उसकी खुमारी तो प्राणोत्सर्ग पर ही समाप्त होगी। विशेष:- वीर रस की व्यंजना हुई है।

(13)

डाकी ठाकर सहण कर, डाकण दीठ चलाय।

मायड़ खाय दिखाय थण, धणपण वलय बताय।।

शब्दार्थ - सहण = सहन, डाकण = डाकिन, दीढ - नजर, मायण = माता, थण = थन/स्तन, धण = स्त्री, पण - भी, वलय - चूड़ा /कड़ा जो सुहाग का प्रतीत होता है।

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने इस दोहे में वीर क्षत्रियों का वर्णन किया है। प्रतापी स्वामी अपने सेवक के अपराध को चुप रहकर यदि सहन कर जाए तो इतना ही उस अपराधी सेवक के लिए मृत्यु तुल्य है। डाकिन अपने भक्ष्य को नजर से ही खा जाती है। वीर माता अपने कायर पुत्र को अपना स्तन का संकेत करके यह कह दे कि तूने दूध लज़ा दिया तो कायर पुत्र का मरण हो जाता है अर्थात् मरण के समान है। इसी प्रकार युद्ध से लौटे हुए कायर पति को यदि पत्नी अपने चूड़े की तरफ इशारा करके कहे कि तूने इस चूड़े को लजा दिया तो उसका भी जीवन मृत्यु तुल्य होता है। भाव यह है कि कायर पुरुष अपराधी के समान है, जिसका जीवित रहना भी मृत्यु तुल्य है।

विशेष :- कवि ने देश के लिए प्राणोत्सर्ग की राजस्थानी परम्परा का वर्णन किया है। रचना में ओज गुण व वीर रस है।

(14)

सहणी सबरी हूं सखी, दो उर उलटी दाह।

दूध लजाणौ पूत सम, बलय लजाणौ नाह।।

शब्दार्थ - सहणी = सहन करना, उर = हृदय, दाह - जलाना, सबरी = सभी कुंछ, पूत = पुत्र नाह = पति

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने वीर सतसई के इस दोहे में वीर क्षत्राणी के भावों का चित्रण किया है। वह अपनी सखी से कहती है कि मैं सब बातें सहन कर सकती हूँ परन्तु दो बातें सहन नहीं हो सकती हैं। ये उलटे मेरे हृदय को जलाती है। इनमें एक बात तो यह कि मेरे पति कहीं मेरे चूड़े (सुहाग) को न लजा दे और पूत्र मेरे दूध को। भाव यह है कि कभी भी मेरा पुत्र व पति युद्ध से पीठ दिखाकर नहीं आए चाहे उनका युद्ध में मरण भले ही हो जाए।

विशेष :- राजस्थान की वीरांगनाओं के त्याग एवं दश प्रेम भाव का वर्णन किया है।

(15)

जे खल भग्गा तो सखी, मोताहल सज थाल।

निज भग्गा तो नाह रौ, साथ न सूनो टाल॥

शब्दार्थ - खल - दुष्ट अर्थात शत्रु, निज = अपने।

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने इस दोहे में वीर क्षत्राणी का वर्णन किया है। वह अपनी सखी से कहती है कि हे सखी ! यदि युद्ध में शत्रु के भागने का समाचार है तो तू मोतियों का थाल सजा ला जिससे मैं अपने वीर पति की आरती उतार कर उसका स्वागत करूंगी और यदि ऐसा नहीं है और अपने ही लोग युद्ध से पीठ दिखा कर भाग आए हैं तो तू चिता सजा ताकि मैं उसमें सती होकर अपने पति के साथ ही मरण का वरण करूँ। भाव यह है कि मेरा पति या तो युद्ध से जीतकर ही लौटेगा या फिर अपने प्राणों का उत्सर्ग ही कर देगा।

विशेष :- वीरांगना नारी की त्याग-भावना एवं देश के प्रति समर्पण भाव का वर्णन है।

(16)

हथलेवै ही मूठ किण, हाथ विलग्गा माय।

लाखां बातां हेकलो चूड़ौ मो न लजाय।

शब्दार्थ - हथलैवे = पाणिग्रहण, मूठ = तलवार की मुठ किण = किन, विलग्गा = छूना, हेकलो = अकेला

सरलार्थ :- इस दोहे में वीर रसावतार कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने वीरांगना नारी के मार्मिक भावों को उजागर किया है। एक सखी अपनी माता से कहती है कि हे माता! विवाह में पाणिग्रहण की रस्म के समय ही अपने पति की हथेली पर तलवार की मूठ का निशान छू गया तभी मैं समझ गई कि वे कभी मेरे चूडे को नहीं लजाएंगे। वे या तो युद्ध से विजयी होकर लौटेंगे या वीरगति प्राप्त करेंगे। इस दोहे का एक अर्थ यह भी निकलता है कि वीरांगना अपनी मां से कहती है कि माँ लाख बातों की एक बात यह है कि चाहे हथलेवे अर्थात् विवाह केसमयही मैं अपने पति को क्यों न खो Vलेकिन वहयुद्धसे पीठ दिखाकर कभी मेरे चूड़े को न लजावे।

विशेष :- राजस्थान में चूड़े को सुहाग का प्रतीक माना जाता है

(17)

समली और निसंक भख अंबक राह न जाह।

पण धाण रौ किम पेखही, नयण बिणट्ठा नाह।।

शब्दार्थ - समली - चील, और = अन्य, निसंक - निसंकोच, भख = खाना, पण = प्रण, धण = स्त्री, अंबक = नेत्र, किम = कैसे, पेख ही = देखेगा, विणट्ठा = बिन आँखों का, नाह = पति

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने वीर सतसई के इस दोहे में वीरांगना नारी का वर्णन किया है,जो अपने पति की चिता के साथ सती हो जाना चाहती है। वह चील से कहती है कि हे चील! तू युद्ध में क्षत विक्षित मेरे पति के किसी भी अन्य अंगों को निस्संकोच खा लेना लेकिन उसकी आँखों की तरफ मत जाना। पति की यह आँखें सुरक्षित रखना इसलिए आवश्यक है ताकि उनको चिता पर भेजने से पहले मेरे सती होने के प्रण को वे अपनी आँखों से देख सकें।

विशेष :- इस दोहे में देश प्रेम, सती व्रत तथा प्राणोत्सर्ग का वर्णन है।

(18)

बिण दामां बिलसै सदा, दामां दुर्लभ नाग।

न्याय भड़ां घर नारियाँ, चूड़ो पोत सुहाग।

शब्दार्थ - बिण - बिना, दामां - मूल्य, विलसै - भोगते है, नाग – हाथी

सरलार्थ :- कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने वीर योद्धाओं के घर चिं में स्त्रियों द्वारा गजमुक्ता के हार व हाथी दाँत के चूड़ों को पहनने प्रा को सार्थक बताया है। कवि कहते हैं कि जो हाथी मूल्य देकर भी ल दुर्लभ होते हैं उन्हें जो शूरवीर बिना मूल्य अर्थात अपनी

ताकत से शत्रु से छीन कर उपयोग में लाते हैं ऐसे ही शूरवीर की स्त्रियों को अ गजमुक्ता के हार और हाथी दांत का चूड़ा सौभाग्य के प्रतीक माने जाए तो उचित ही है।

विशेष :- 'दामां' में लाटानुप्रास अलंकार है। जब शब्द की आवृत्ति हो, अर्थ प्रत्येक बार वही हो लेकिन अन्वय भिन्न हो वहां लाटानुप्रास अलंकार होता है।

(19)

काय कलाली छल कियौ, सेज गुमावण रंग।

फूल दुबारै छाकियौ, चीते, चौगुण जंग।

शब्दार्थ - काय = क्यों, कलाली = शराब बेचने वाली, गुमावण = खोने वाला, चींत = चिंतन करता है, फूल = फुल।

सरलार्थ :- कवि मिश्रण ने इस दोहे में पराक्रमी योद्धा का वर्णन किया है,जो अपनी प्रिया के साथ रति रंग में भी युद्ध का स्मरण करता है। नायिका कलालिन से कहती है कि ऐ कलालिन! तूने यह क्या छल किया जिससे रति शैया का मजा ही समाप्त हो गया। वह तो तेरी बढ़िया शराब से मस्त होकर युद्ध का ही चौगुना चिंतन या वर्णन करता है। भाव यह है कि वीर पुरुष सदैव युद्ध व । प्राणोत्सर्ग का ही विचार करता है। उसका मन अन्य रंग में नहीं - लगता। ने विशेष:- काय कलाली व चीते चौगुण में अनुप्रास 7 अलंकार है।

(20)

भड़ घोड़ा महंगा थिया, एकण झाट उडत।

भड़ घोड़ारा भामणा, जेथ जुड़ीजै कंत।।

शब्दार्थ - एकण - एक, झार - झटका, भड़ - योद्धा, भामणा = बलिहारी।

सरलार्थ :- कवि कहता है कि पराक्रमी योद्धा के एक बार ही युद्ध में मुकाबले के लिए उतरने से योद्धा व घोड़ों की कद्र

होने लगती है, उनके मूल्य बढ़ जाते हैं। क्यों न हो, जहाँ मेरे कंत नी. मुकाबले के लिए जाते हैं, वहाँ लोग घोड़ों व बहादुरों की बलिहारी - लेने लगते हैं। भाव यह है कि नायिका का पराक्रमी पति इतना दा प्रतापी योद्धा है कि जिसके एक बार ही युद्ध में उतरने से शत्रुओं में का भय छा जाता है तथा वे अपने बचाव के लिए अच्छे से अच्छे घोड़े. न। व बहादुरों की तलाश में होते हैं। इससे घोड़ों व बहादुरों की कीमत हो बढ़ जाती है।

विशेष :- अतिशयोक्ति अलंकार है।

हिन्दी भाषा शिक्षण

भाषा कौशल

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार भाषा सीखने का सही क्रम –

1.	सुनना	(सु)	L – Listening
2.	बोलना	(बो)	S – Speaking
3.	पढ़ना	(प)	R – Reading
4.	लिखना	(लि)	W – Writing

डॉ. मेरिया मॉण्टेसरी ने भाषा सीखने का सही क्रम इस प्रकार प्रस्तुत किया –

1.	सुनना	(सु)	L – Listening
2.	बोलना	(बो)	S – Speaking
3.	लिखना	(लि)	W – Writing
4.	पढ़ना	(प)	R – Reading

1. श्रवण कौशल (सुनना)

श्रवण कौशल एक महत्वपूर्ण कौशल है जो शिशु जन्म से ही प्रारंभ हो जाता है। मनुष्य अपने ज्ञान का अधिकांश भाग श्रवण कौशल से अर्जित करता है।

- मनुष्य अपने भाषा व्यवहार का लगभग – 45% सुनने में उपयोग करता है।
- भाषा शिक्षण के संदर्भ में श्रवण का अर्थ – सुनकर भाव ग्रहण करना।
- श्रवण कौशल में किसी कथन को ध्यान–पूर्वक सुनकर सुनी हुई बात को चिन्तन व मनन करने तथा अपना मन्तव्य स्थिर करने और उसके अनुसार आचरण या व्यवहार की प्रक्रिया सम्मिलित है।
- श्रवण कौशल का अर्थ – बालक में ऐसी क्षमता विकसित करना जिससे वह किसी कथन को ध्यान से सुन सके। सुनी हुई बात पर चिन्तन व मनन कर सके और उचित निर्णय ले सके।

श्रवण कौशल का महत्व

1. श्रवण में कुशलता से बालक अन्य के विचारों को सरलता व शीघ्रता से ग्रहण कर सकता है।
2. श्रवण कौशल से ही बालक उच्चारण व अनुकरण करना सीखता है।
3. इससे बालक शुद्ध व अशुद्ध ध्वनियों शब्दों के उच्चारण में भेद कर सके।
4. संचार माध्यमों पर प्रस्तुत समाचारों व संवादों को सुनकर अर्थ समझ सकेगा।
5. सुनी हुई विषय वस्तु के आधार पर शिष्टाचार पूर्वक प्रश्न पूछ सकेगा व अपनी शंका का समाधान कर सकेगा।

श्रवण कौशल के समय सावधानियाँ

1. श्रोता के बैठने की स्थिति उपयुक्त होनी चाहिए।
2. श्रोता को वक्ता की ओर मुँह करके बैठना चाहिए।
3. सुनते समय कोई अन्य कार्य जैसे – पढ़ना, वार्तालाप आदि नहीं करना चाहिए।
4. वक्ता के विचारों के समय सहमती जताते हुए हाँ, हूँ शब्दों का प्रयोग करना।
5. मनोयोगपूर्वक, धैर्यपूर्वक ध्यान केन्द्रीत करके सुनना चाहिए, श्रोता को श्रवण में ही दत्तचित होना चाहिए मुख मुद्रा प्रसन्न होनी चाहिए।

श्रवण कौशल के प्रकार

1. अवधानात्मक
2. रसात्मक
3. विश्लेषणात्मक

1. **अवधानात्मक** – श्रुत सामग्री को ध्यान–पूर्वक सुनकर उसके मुख्य तथ्यों विचारों आदेशों–निर्देशों को ग्रहण करना।
2. **रसात्मक** – उचित लय–ताल, आरोह, अवरोह तथा स्वराघात, भाव–भंगिमा आदि रसानुभूति करना।
3. **रसात्मक** – श्रुत सामग्री में प्रस्तुत विचारों भावों आदि पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार मंथन करना।

श्रवण कौशल के विकास के अवसर

1. **कक्षा–शिक्षण के दौरान** – कहानी, बातचीत, बालगीत, कथन को विभिन्न मनोभावों में व्यक्त करना।
2. **सहशैक्षिक क्रियाओं के दौरान** – वाद–विवाद, कहानी, प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, आशु भाषण, कविता वाचन प्रतियोगिता आदि द्वारा।
3. **कक्षांतर कार्यकलापों के दौरान** – आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि।

श्रवण दोष के निराकरण के उपाय

1. कम सुनाई देने वाले बच्चों को अग्रिम पंक्तियों में बैठाना।
2. वक्ता सुस्पष्ट व उच्च आवाज में बोलना चाहिए।
3. मंत्रों का प्रयोग करके श्रवण कौशल दिया जा सकता है।

2. उच्चारण कौशल

मौखिक अभिव्यक्ति कौशल

कथन कौशल

- भाषा में व्याकरण को छोड़ कर शुद्ध उच्चारण का महत्व है।
- यह एक उत्पादक कौशल है जिसमें वागिन्द्रियाँ सम्मिलित हैं।
- व्याख्यान, वार्तालाप, प्रवचन आदि उच्चारण के रूप हैं।
- पाणिनी के अनुसार स्वरों व वर्णों के अशुद्ध उच्चारण से मंत्र का अर्थ – अनर्थ हो जाता है।
- उच्चारण शिक्षण भाषा ज्ञान का आवश्यक अंग है।
- शुद्ध उच्चारण द्वारा भावाभिव्यक्ति उपयुक्त होती है। शुद्ध उच्चारण से भाषा का परिष्कार होता है।

उद्देश्य

1. इससे विद्यार्थी शुद्ध, स्पष्ट, स्वभाविक एवं प्रवाह युक्त वाणी में वार्तालाप एवं भाषण करने की क्षमता अर्जित कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी भावानुकूल, अवसरायुक्त, उचित भाषा–शैली तथा हाव–भाव को व्यक्त कर सकेंगे।
3. अपने मनोभावों को स्वाभाविक एवं भावानुरूप ढंग से अभिव्यक्त कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी भावनुकूल आरोह, अवरोह बल और अनुत्रान का ध्यान रखते हुए मौखिक अभिव्यक्ति कर सकेंगे।
5. वार्तालाप, परिचर्चाओं में भाग ले सकेंगे।
6. स्वागत, परिचय, धन्यवाद, कृतज्ञता, संवेदना, बधाई आदि मनोभावों के लिए उपयुक्त भाषा का प्रयोग।
7. विचारभिव्यक्ति के दौरान असहमति होने पर अपनी प्रतिक्रिया दे सकेंगे।

मौखिक अभिव्यक्ति के रूप

1. औपचारिक – (अ) साहित्यिक (ब) व्यावहारिक
2. अनौपचारिक – घर, परिवार आदि की जाने वाली बातचीत

मौखिक अभिव्यक्ति की विशेषताएँ

1. उच्चारण की शुद्धता
2. स्वभाविकता व स्पष्टता
3. विचार क्रमबद्धता
4. सशक्ता
5. प्रवाह
6. अवसरानुकूल

मौखिक अभिव्यक्ति के विकास का माध्यम

1. अनौपचारिक बातचीत
2. कहानी कथन
3. घटना वर्णन
4. चित्र वर्णन
5. भाषण
6. संवाद एकांकी, नाटक
7. आशुभाषण, वाद–विवाद, बालसभा

मौखिक अभिव्यक्ति से संबंधित त्रुटियाँ

1. अधिक या न्यून गति।
2. ध्वनियों, शब्दों का गलत उच्चारण व यथास्थान बलाघात न होना।
3. उचित स्थान पर विराम न देना तथा व्याकरण के नियमों का उल्लंघन करना।
4. शब्दों का गलत प्रसंग में प्रयोग करना।
5. प्रवाह तथा ओजस्विता में कमी होना।
6. मनोवैज्ञानिक दोष।

निराकरण

1. उच्चारण अवयवों की जाँच।
2. शैक्षिक निर्देशन व सहायता कार्यक्रम।
3. सुनियोजित शैक्षिक क्रियाकलापों का विद्यालय स्तर पर आयोजन।
4. अभिनव प्रयोगों से संबंधित उपचारात्मक शिक्षण।

दोषों के कारण

1. शारीरिक प्रभाव।
2. मानसिक प्रभाव।
3. भौगोलिक प्रभाव।
4. सामाजिक प्रभाव।
5. अज्ञानता व असावधानी।
6. शीघ्र प्रयत्न, प्रयत्न लाघव।
7. अध्यापक द्वारा अशुद्ध उच्चारण।

3. पठन कौशल/वाचन कौशल

1. पठन या वाचन एक सोद्देश्य, सार्थक, चिन्तन प्रधान प्रक्रिया है।
2. पठन में दक्ष व्यक्ति ही लिखित ज्ञान भण्डार का उपयोग कर सकता है।
3. पठन एक बहुआयामी जटिल प्रक्रिया है जिसमें लिपि–चिन्हों की पहचान एवं उनके उच्चारण की कुशलता के साथ–साथ पठित सामग्री के अर्थग्रहण एवं उसका पूर्ण रूप से समझ लेने की योग्यता का समावेश।

पठन कौशल के सोपान

1. प्रत्ययाभिज्ञान
2. अर्थग्रहण
3. मूल्यांकन एवं प्रतिक्रिया
4. अनुप्रयोग

पठन कौशल के प्रकार

(अ) सस्वर पठन कौशल (वाचन)

1. आदर्श वाचन – शिक्षक द्वारा
2. अनुकरण वाचन – बच्चों द्वारा
3. समवेत वाचन – शिक्षक व बच्चों दोनों द्वारा

(ब) मौन पठन कौशल (वाचन)

1. द्रुत पठन वाचन – जल्दी–जल्दी किया जाता है।
2. गंभीर पठन वाचन – ध्यानपूर्वक धीरे–धीरे किया जाता है।

पठन कौशल के उद्देश्य

1. छात्रों को शब्दों ध्वनियों व उच्चारण का उचित ज्ञान करवाना।
2. उच्चारणगत त्रुटियों को सुधारना।
3. विराम, लय, आरोह, अवरोह, आदि का ज्ञान करवाना।
4. अर्थ पर ध्यान देते हुए प्रभावशाली ढंग से वाचन करना।
5. शब्द भण्डार में वृद्धि करना।
6. पठन में रूचि जाग्रत कर छात्रों को स्वाध्याय की ओर उन्मुख करना।

पठन संबंधी त्रुटियाँ व उपाय

1. अशुद्ध उच्चारण करना।
2. उपयुक्त बलाघात न होना।
3. विराम चिन्हों का गलत प्रयोग करना।
4. पठन में आरोह, अवरोह का अभाव।

4. लेखन कौशल

- लेखन कौशल से बच्चे की अधिगम क्षमता का विकास होता है।
- लेखन एक कला है जो दो चरणों में सम्पन्न होती है।
  1. **प्रथम चरण –** भाषा की ध्वनियों को लिपिबद्ध करके शुद्ध सुपाठ्य एवं सुन्दर रूप में प्रस्तुत करने की कुशलता प्राप्त की जाती है।
  2. **दूसरे चरण –** लिपि प्रतीकों के माध्यम से अपने भावों विचारों की सुस्पष्टता अर्थपूर्ण एवं प्रभावी अभिव्यक्ति की योग्यता सम्मिलित है।

लेखन कौशल से विद्यार्थी में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन

1. विद्यार्थी सुलेख के पाँच तत्व – स्वच्छता, स्पष्टता, बनावट, सिरोरेखा, गति का सही प्रयोग कर सकेगा।
2. विराम चिह्नों व व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग कर सकेगा।
3. सन्दर्भ अनुसार मुहावरों, लोकोक्तियों, वाक्यों, वाक्यांशों आदि का अर्थानुकूल प्रयोग कर सकेगा।
4. लिखित अभिव्यक्ति में क्रमबद्धता, एकता व सुसंबद्धता बनाए रख सकेगा।

लेखन कौशल के प्रकार

1. सुलेख – सुंदर लिखना।
2. अनुलेख – अध्यापक का अनुकरण करके लिखना।
3. श्रुतिलेख – सुनकर लिखना।
4. प्रतिलेख – किताब में देखकर लिखना।

लेखन कौशल की विधियाँ

1. खण्डरा लेखन विधि
2. रूपरेखा विधि
3. अनुलेखन विधि
4. तुलना विधि – यह विधि द्वितीय भाषा सिखाने के लिए उपयुक्त है इसमें विद्यार्थी को द्वितीय भाषा के वर्ण पहले सीखाए जाते हैं। जिनकी संरचना, मातृभाषा के वर्णों से मिलती है।

लेखन के तत्व

1. शब्दों का सही प्रयोग।
2. वाक्य रचना।
3. तथ्यों का तार्किक प्रस्तुतीकरण
4. वर्तनी

लेखन के दोष

1. लेखन सिखाने में उचित विधि न अपनाना।
2. अपरिपक्व अवस्था में लिखना सिखाना।
3. उचित लेखन सामग्री का अभाव।
4. सुलेख का अभ्यास नहीं करवाना।
5. लिपि की अनभिज्ञता।
6. क्षेत्रीय भिन्नता।

निराकरण के उपाय

1. उचित अवस्था में ही लेखन करवाया जाए।
2. बालक के व्यक्तित्व का सम्मान।
3. उचित लेखन विधियों का प्रयोग।
4. उच्चारण अभ्यास।
5. श्रुत लेखन का अभ्यास।
6. अशुद्धि कोष का निर्माण करना।

शिक्षण के अन्य कौशल

1. प्रस्तावना कौशल
2. प्रश्नोत्तर कौशल
3. श्यामपट्ट कौशल

प्रस्तावना कौशल

- इसका उद्देश्य पूर्व ज्ञान और पूर्व अर्जित कौशलों के आधार पर शिक्षण उद्देश्यों में स्पष्टता लाना है।

प्रमुख तत्व –

1. अवधान केन्द्रित करना
2. प्रेरित करना
3. सम्बन्धित पाठ की संरचना व निर्माण

प्रस्तावना कौशल के घटक

1. प्रश्न पूर्व ज्ञान पर आधारित होने चाहिए।
2. प्रश्न पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ने वाले होने चाहिए।
3. प्रश्न सरल से कठिन की ओर होने चाहिए।
4. प्रश्न एकांकी होने चाहिए।
5. प्रश्न प्रकरण से सम्बन्धी होने चाहिए।

प्रस्तावना कौशल के प्राप्त उद्देश्य

- यदि इस शिक्षण कौशल का सही उपयोग किया जाये तो शिक्षक निम्न उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है।

1. छात्रों में प्रेरणा का जागरण और निरंतरता बनाये रखना।
2. ध्यान केन्द्रित कर छात्रों को नवीन अधिगम देना।
3. सम्बन्धित क्रियाओं को प्रारम्भ करने हेतु विधिवत साधनों का प्रयोग करना।
4. प्रस्तावना के द्वारा ज्ञात से अज्ञात की ओर सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।

प्रश्नोत्तर कौशल

- शिक्षण को प्रभावशाली एवं सफल बनाने के लिए प्रश्नोत्तर एक महत्वपूर्ण कौशल है जिसमें पारंगत होना सभी शिक्षकों के लिए अनिवार्य है। जिसको निम्न प्रकार समझा जा सकता हैं –

प्रश्नों की संरचना –

- प्रश्नों की संरचना से तात्पर्य प्रश्न की रचना या प्रश्न बनाने से है। जिसके लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।
- जिसके अंतर्गत प्रश्नों का प्रकार, उसकी भाषा, विषयवस्तु से प्रश्नों का सम्बन्ध एवं प्रश्नों के स्तर का अध्ययन सम्मिलित है।

कक्षा में प्रश्न पूछना –

- कक्षा में प्रश्न पूछना एक कला है, जिसका सम्बन्ध सम्प्रेषण से होता है।
- प्रश्न पूछने की गति, शिक्षक की आवाज तथा कब किससे किस स्तर का प्रश्न पूछा जाए यह शिक्षक के विवेक को दर्शाता है।

प्रश्नोत्तर कौशल में प्रश्नों की भूमिका

- शिक्षण प्रक्रिया के समय शिक्षक छात्रों से प्रायः प्रश्न पूछता है। शिक्षक द्वारा छात्रों को प्रश्न पूछने के अनेक प्रयोजन है शिक्षक प्रश्नों के माध्यम से छात्रों को अधिगम के लिए प्रेरित करता है। कभी–कभी वह यह जाँच भी करता है कि छात्र विषयवस्तु को समझ रहे है या नहीं।
- कभी वह प्रश्नों के माध्यम से पुरावर्ती करता है। उपर्युक्त से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रश्न शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

प्रश्नोत्तर कौशल में प्रश्नों की संरचना सम्बन्धी घटक

सम्बद्धता –

- प्रश्न बनाते समय इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए।
- प्रश्न बनाते समय कि प्रश्न पढ़ाये जाने वाली विषय वस्तु से सम्बन्धित हो।

संक्षिप्त एवं सटीक –

- संक्षिप्त एवं सटीक से तात्पर्य प्रश्नों की लम्बाई से है।
- प्रश्न संक्षिप्त एवं बिंदु निर्देशित हो क्योंकि अधिक बड़े प्रश्न छात्रों को जल्दी से समझ नहीं आते हैं। ये प्रश्न समय को नष्ट करते हैं।

स्पष्टता–

- स्पष्टता का तात्पर्य प्रश्नों की भाषा से है। प्रश्न की भाषा ऐसी होनी चाहिए कि छात्र उसे समझ सके।
- इस प्रकार के प्रश्न जिज्ञासा उत्पन्न करने में सहायक होते हैं और छात्रों के चिन्तन को बढ़ावा देते हैं यदि प्रश्नों की भाषा जटिल होगी तो छात्र प्रश्न समझने में कठिनाई अनुभव करेंगे।

श्यामपट्ट कौशल –

- सबसे अधिक उपयुक्त कौशल है। यह छात्र और शिक्षक दोनों के लिए लाभदायक है यह शिक्षक के लिए विषयवस्तु को समझाने में तथा छात्रों के लिए विषयवस्तु को बोधगम्य बनाने में सक्रिय भूमिका निभाता है।

श्यामपट्ट कौशल के प्रमुख घटक –

लेख की स्पष्टता –

- इसके अन्तर्गत अध्यापक को स्पष्ट शब्दों को उपयुक्त आकार और सीधी लाइन में लिखना चाहिए तथा प्रकरण को गहरे काले अक्षरों में या बड़े अक्षरों में लिखना चाहिए।

श्यामपट्ट कार्य में स्वच्छता –

- इसके अन्तर्गत दो रेखाओं के मध्य अन्तराल सीधी रेखाएँ व समान्तर वाक्य विन्यास आते हैं।

श्यामपट्ट कार्य की उपयोगिता –

- इसमें मुख्य बिन्दुओं व शब्दों का रेखांकन, उपयुक्त रेखा चित्र आदि आते हैं।
- श्यामपट्ट को ऊपर से नीचे की ओर साफ करना चाहिए।